भातखंडे संस्कृति विवि

भारतीय कला एवं संस्कृति पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

भारतीय संगीत जीवन-पद्धति और साधना है : डॉ. किरण सेठ

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय ने गुरुवार को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में भारतीय कला एवं संस्कृति विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया। चेयरमैन स्पिक मैके डॉ. किरण सेठ ने ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. मांडवी सिंह ने स्पिक मैके के चेयरमैन डॉ. किरण सेठ का पुष्पगुच्छ, स्मृति-चिह्न एवं अंगवस्त्र भेंट कर स्वागत किया। अपने सम्बोधन में कुलपति ने डॉ. किरण सेठ के विश्वविद्यालय आगमन पर अभिनंदन करते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने स्पिक मैके के साथ अपने पुराने जुड़ाव को स्मरण करते हुए कहा कि संस्था द्वारा भारतीय कला एवं संस्कृति को

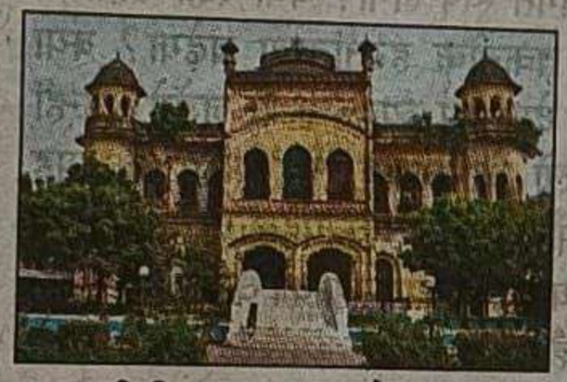

युवा पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने कहा कि संगीत और भारतीय संस्कृति को युवाओं से जोड़ना आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि यदि देश का युवा भारतीय संगीत एवं संस्कृति को डॉ. किरण सेठ की दृष्टि से समझने लगे, तो भारत की सांस्कृतिक तस्वीर और अधिक समृद्ध एवं सशक्त होगी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय भारतीय कला एवं संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और युवा पीढ़ी तक उसके प्रसार के लिए सदैव प्रतिबद्ध है।

इस अवसर पर स्पिक मैके के चेयरमैन डॉ. किरण सेठ ने विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को भारतीय संगीत एवं सांस्कृतिक परम्पराओं की गहनता और समृद्ध विरासत से परिचित कराया। उन्होंने कहा कि भारतीय शास्त्रीय संगीत केवल मंचीय प्रस्तुति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जीवन-पद्धति और साधना है। उन्होंने कहा कि शास्त्रीय संगीत की साधना व्यक्ति के बैठने और अनुशासन से ही प्रारम्भ हो जाती है।

उन्होंने कहा कि आज संगीत को केवल परफॉर्मेंस तक सीमित कर देना उचित नहीं है, इसके पीछे निहित साधना, अनुशासन, चिंतन और जीवन-मूल्यों को समझना आवश्यक है। डॉ. सेठ ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि भारतीय संगीत को समझने के लिए अपनी जीवनशैली, खान-पान, रहन-सहन और सोच में भी भारतीयता के मूल तत्वों को आत्मसात करना आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों से प्रेरक रूप से कहा कि आपको तानसेन बनना है, कानसेन नहीं। उन्होंने स्पष्ट किया कि केवल सुनना पर्याप्त नहीं है, बल्कि जो कुछ सीखा जा रहा है, उसका निरंतर चिंतन, मनन और अभ्यास आवश्यक है।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव एसपी सिंह ने कहा कि स्पिक मैके के साथ विश्वविद्यालय का एमओयू है। भारतीय संगीत व कला के प्रशिक्षण व संवर्धन के लिए हमें हमे इसका सहयोग प्राप्त हो रहा है।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की विभागाध्यक्ष गायन प्रो. सृष्टि माथुर, विभागाध्यक्ष तालवाद्य मनोज कुमार मिश्र, विभागाध्यक्ष नृत्य ज्ञानेन्द्र दत्त बाजपेयी, सहायक आचार्य नृत्य मंजुल पंत सहित अन्य शिक्षक, शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।